तर्ज--जिंदगी की ना टूटे लड़ी
सतगुरू बनके आये धनी,आंख वालो ने पहचान की
निजधाम से लाये हमें, लेके जाएगें हमको वही

1--आ के धारा है नासूती तन
अन्दर अर्श की शक्ति पूरण
सुन्दरसाथ को धाम धनी
अर्श दिखलाते कर के जतन
सबके दामन मे बरकत भरी

2--दर्शन करके सुंकु मिल रहा
इस माहोल का करिश्मा है ये
मेहर आपकी लाई हमे
वरना मुश्किल होता मिलना ये
इन जीवो को भी कायमी मिली

3--कुछ भी कहता रहे ये जहां
कुछ भी समझा करे दुनिया
कायम अर्श के नूरे चमन
उतरे शाहे दो आलम यहां
पा गया जिसने माना धनी

Nijanand App